RNI NO- UPHIN/25/A1981

वर्ष - 1/अंक-2/ मूल्य- 10 रुपये/अक्टूबर 2025

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका हिन्दी

स्वराष्ट्रम युगे युगे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष

100 YEARS OF RSS

संघ शताब्दी -राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

एक पहल ऐसी भी...

वाराणसी से कुछ किलोमीटर दूर मुसहर बस्ती में जब सूरज की पहली किरण झुग्गियों पर पड़ती है, तो कुछ बच्चे अपने छोटे हाथों में पुरानी किताबें थामे पाठशाला की ओर बढ़ते दिखते हैं। उनके चेहरे पर सुबह की उबासी नहीं बल्कि मुस्कान तैरती है। इन मुस्कुराते चेहरों के पीछे का कथानक दिवि वेलफेयर सोसाइटी की सोच से उपजा है।यह कहानी है उन युवाओं की, जिन्होंने यह मान लिया कि बदलाव की शुरुआत किसी बड़े मंच से नहीं, बल्कि किसी मोहल्ले से भी हो सकती है। गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक वंचना से जूझते इलाकों में इन युवाओं ने उम्मीद की एक छोटी लौ जलाई...

शिक्षा की लौ

इस विश्वास के साथ कि “शिक्षा से समाज का निर्माण होता है”, दिवि वेलफेयर सोसाइटी ने शिक्षा को अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी की तरह अपनाया। संस्था का उद्देश्य केवल बच्चों को स्कूल भेजना नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, जागरूक और संवेदनशील नागरिक बनाना है। काशी की धरती से निकली यह पहल अब एक नई तस्वीर गढ़ रही है, जहां हर हाथ में कलम और हर आंख में उम्मीद हो।

काशी की धरती से जनसेवा की राह पर

संस्था के संस्थापक बीर भद्र सिंह, मूल रूप से आजमगढ़ के निवासी हैं। बचपन में उन्होंने अपने आस-पास कई ऐसे बच्चों को देखा जो गरीबी या सामाजिक कारणों से स्कूल नहीं जा पाते थे। अपनी शिक्षा पूरी करने काशी आए तो यह संवेदना एक संकल्प में बदल गई। फिर अपने साथियों के साथ मिलकर इन्होंने शिक्षा को अधिकार नहीं, बल्कि मानवता का धर्म बनाने की दिशा में काम करना शुरू किया। इसी सोच से वर्ष 2018 में वाराणसी में दिवि वेलफेयर सोसाइटी की स्थापना हुई। उद्देश्य स्पष्ट था, “हर बच्चा स्कूल जाए, शिक्षित बने और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण हो।” संस्था का टैगलाइन “A Pen in Every Hand” इस संकल्प को सार्थक रूप में व्यक्त करता है।

अपनी पाठशाला
शिक्षा से जुड़ने की राह

दिवि वेलफेयर सोसाइटी ने “अपनी पाठशाला” परियोजना की शुरुआत की, जिसके माध्यम से झुग्गी-बस्तियों और वंचित इलाकों के बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ा जा रहा है। संस्था के स्वयंसेवकों ने वाराणसी, मिर्जापुर, आजमगढ़ और आस-पास के जिलों में सर्वे कर हजारों ऐसे बच्चों की पहचान की जो या तो कभी स्कूल नहीं गए या बीच में पढ़ाई छोड़ चुके थे। उन्हें स्कूल में दाखिला दिलाने के साथ-साथ दिवि ओपन स्कूल एवं रेमेडियल सेंटर में बुनियादी शिक्षा, नैतिक मूल्य और जीवन-कौशल सिखाया जाने लगा।

धीरे-धीरे इन पाठशालाओं का असर दिखने लगा। अब झुग्गी-बस्तियों के बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाने लगे हैं। संस्था ने केवल बच्चों तक सीमित न रहते हुए ग्रामीण महिलाओं को भी साक्षर बनाने की दिशा में कार्य किया है। उन्हें पढ़ना-लिखना, बैंक में हस्ताक्षर करना और सरकारी योजनाओं की जानकारी देना इसका अहम हिस्सा है।

सामाजिक संघर्ष और सहयोग की मिसाल

साल 2020 में "अपनी पाठशाला" का एक केंद्र वाराणसी के करसड़ा बस्ती में मुसहर समुदाय के बच्चों के लिए चल रहा था। अचानक प्रशासनिक कार्रवाई के दौरान पूरी बस्ती उजड़ गई। परिवारों के सामने आवास और शिक्षा दोनों का संकट था।ऐसे कठिन समय में दिवि ने इन परिवारों के साथ खड़े होकर उनकी आवाज बन गई। संस्था के प्रयासों से सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत प्रभावित परिवारों को भूमि और स्थायी आवास उपलब्ध कराया। यह घटना संस्था की संवेदनशीलता और सामाजिक प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण बन गई।

कोविड काल में मानवता की सेवा

कोविड-19 महामारी के दौरान जब सड़कों पर सन्नाटा था, तब दिवि वेलफेयर सोसाइटी के स्वयंसेवक उन गलियों तक पहुँचे जहाँ मदद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। संस्था ने वाराणसी और आसपास के क्षेत्रों में 50,000 से अधिक लोगों तक भोजन और अनाज पहुचाया।

संस्थापक बीर भद्र सिंह बताते हैं –
"हमारे संस्था के सदस्य बिना किसी प्रचार के लोगों तक पहुंचे। उस कठिन दौर में बस यही लक्ष्य था... कोई भूखा न सोए।"

DIVI WELFARE SOCIETY

A Pen in Every Hand

शिक्षा से आगे — समग्र विकास की दिशा

संस्था का मानना है कि शिक्षा तभी सार्थक है जब बच्चा शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। इसी सोच से वर्ष 2025 में 'दिवि क्वेस्ट प्रोजेक्ट' शुरू किया गया। इसके अंतर्गत सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में "दिवि क्वेस्ट एग्ज़ाम" आयोजित की जाती है, ताकि बच्चों की योग्यता और समझ का मूल्यांकन हो सके और उन्हें आगे की शिक्षा के लिए प्रेरित किया जा सके। भारत में जहाँ प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–5) पर ड्रॉपआउट दर 1.9% है, वहीं उच्च प्राथमिक (कक्षा 6–8) पर यह 5.2% तक पहुँच जाती है। दिवि का उद्देश्य इस दर को घटाना और बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना है।इसके साथ संस्था स्थानीय अस्पतालों और चिकित्सकों की मदद से स्वास्थ्य परीक्षण और उपचार भी कराती है, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।वैश्विक दृष्टि और सहयोगवर्ष 2022 से दिवि वेलफेयर सोसाइटी ने इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ बिजनेस (IAB), अमेरिका के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार और कॉन्फ्रेंस आयोजित करने शुरू किए। इनमें देश-विदेश के शिक्षाविद, शोधकर्ता और समाजसेवी भाग लेते हैं। शिक्षा, संस्कृति, नीति निर्माण और सतत विकास जैसे विषयों पर होने वाली इन चर्चाओं से संस्था को वैश्विक दृष्टिकोण और आधुनिक प्रबंधन प्रणाली अपनाने में मदद मिली है।

संस्थागत साझेदारी और सम्मान

दिवि वेलफेयर सोसाइटी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) सहित कई शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी की है। संस्था इन विश्वविद्यालयों के समाजकार्य विभागों के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है, जिससे छात्रों को जमीनी स्तर पर अनुभव और प्रशिक्षण मिलता है। अपने प्रभावी कार्यों के लिए संस्था को उत्तर प्रदेश के राज्यपालों और प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों जैसे दैनिक जागरण और अमर उजाला द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। ये सम्मान संस्था की विश्वसनीयता को और मज़बूत करते हैं।

"A Pen in Every Hand" — एक अभियान, एक संकल्प

दिवि वेलफेयर सोसाइटी की यात्रा केवल एक संगठन की नहीं, बल्कि संवेदनशील कर्मों से समाज बदलने के आंदोलन की कहानी है। वाराणसी की गलियों से शुरू हुई यह पहल आज शिक्षा, सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन का राष्ट्रीय अभियान बन चुकी है। संस्था का विश्वास है... "समाज में परिवर्तन केवल किताबों से नहीं, बल्कि संवेदनशील कर्मों से आता है।"

भविष्य की दिशा

संस्था आने वाले वर्षों में "दिवि क्वेस्ट" को देशभर के सरकारी विद्यालयों तक पहुँचाने और "अपनी पाठशाला" मॉडल को डिजिटल माध्यम से लागू करने की योजना बना रही है। दिवि का सपना स्पष्ट है... "हर बच्चा शिक्षित हो, हर महिला सशक्त हो, हर परिवार आत्मनिर्भर बने।"अगर ऐसी संवेदनशील पहलें निरंतर चलती रहीं, तो आने वाले वर्षों में काशी ही नहीं, बल्कि पूरे देश में शिक्षा और सशक्तिकरण की नई रोशनी फैल सकती है।